स्वामी दयानन्द सरस्वती का शिक्षा दर्शन : कोविड-19 के संदर्भ में

डॉ. वर्षा मेहन्दीरत्ता
सहायक आचार्य
एस.एस.जी. पारीक स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय
जयपुर (राजस्थान) भारत
vershabatta9@gmail.com

सारांष

शोध-सार : स्वामी दयानन्द सरस्वती की शैक्षिक विचारधारा का गहन अध्ययन करने पर हमें पता चलता है कि स्वामी जी शिक्षा को मानव कल्याण के लिए अनिवार्य मानते थे। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना होता है। बालक को आजीविका अर्जन के लिए सक्षम बनाने का कार्य शिक्षा ही करती है। स्वामी जी राष्ट्र के प्रति प्रेम जागृत करना शिक्षा का उद्देश्य मानते थे। गुरु का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है। बालक के लिए गुरु सदैव सम्माननीय होता है। छात्र को गुरु के सानिध्य में रहकर ही शिक्षा प्राप्त करनी होती थी। छात्र का जीवन पूर्णत अनुशासित एवं मर्यादित होना चाहिए। शिक्षा का कार्य बालक में नैतिक मूल्यों का विकास करना है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति में सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, धार्मिक, एवं नैतिक मूल्य विकसित होते हैं। बालक की मनोवृत्तियों का पूर्णतः विकास सामाजिक परिप्रेक्ष्य में ही किया जाना चाहिए ताकि बालक सामाजिक बन सकें व अपने जीवन का विकास कर सके।

बीजशब्द : ि ाक्षा,नैतिक मूल्य, सर्वांगीण विकास, शैक्षिक विचारधारा

स्वामी दयानन्द सरस्वती के एवं दार्शनिक होने के नाते उनके विचार शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम कोटि के है जिनका अनुसरण हर भारतीय को करना चाहिए। दयानन्द जी अपने युग के एक सजग प्रहरी की भाँति रहे है। उनके व्यक्तित्व में विद्वान की प्रखरता, साधक की संस्कृति के असीम अनुरागी, प्राचीन भारतीय आदर्शों के प्रति सहज प्रेम उच्च कोटि के चिंतक, शिक्षा विद् व भारतीय संस्कृति के पोषक थे। उनके जीवन का आदर्श सादा जीवन उच्च विचार था। उनके स्वभाव का सबसे बड़ा गुण त्याग था। उनके व्यक्तित्व के समस्त गुणों का अनुसरण आज के प्रत्येक विद्यार्थी को करना चाहिए।

स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षा दर्शन का महानतम उद्देश्य मानव के आत्मिक, शारीरिक, मानसिक उन्नयन एवं शील के निर्माण को माना जाता है ताकि उनमें ज्ञान का उपयोग समाहित हो सके।

स्वामी दयानन्द ने कोई नया सम्प्रदाय नहीं चलाया अपितु उनका उद्देश्य तो वैदिक धर्म के सूखे वृक्ष को पुनः हरा भरा करना था। उन्होंने क्रान्ति की अपेक्षा सुधार को अपनाया। उन्होंने वेदों का सही भाष्य करने का बीड़ा उठाया और वैदिक धर्म का सच्चा रुप सामने रखने का प्रयास किया। वैदिक धर्म के प्रचार के लिए इन्होंने 1875 ई. में आर्य समाज की स्थापना की। इस प्रकार निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि स्वामी जी के शैक्षिक विचारों के द्वारा हम वर्तमान परिस्थितियों में सुधार ला सकते हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी समाज में स्त्रियों का स्थान महत्वपूर्ण मानते थे। वे पुरुष के साथ नारी की समानता का पूर्ण समर्थन करते हैं। उनके अनुसार भारतीय समाज की हीनावस्था का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि इस समाज में नारी का सम्मान पूर्ण स्थान नहीं रह गया है। वे नारी और पुरुष के अधिकारों की पूर्ण समानता स्वीकार करते हैं पर दोनों के कार्यक्षेत्रों का विभाजन भी मानते हैं। आज के बदलते हुए समाज में स्त्री पुरुष के कार्यक्षेत्र में अलगाव सम्भव नहीं रह गया है। परन्तु इससे दयानन्द के विचारों को संकुचित नहीं माना जा सकता है और उनकी क्रान्तिकारिता पर प्रश्न नहीं किया जा सकता है। क्योंकि इस प्रकार जो समाज बनता जा रहा है वह अपने आप में परिस्थिति की उपज है, उसे आदर्श समाज कहना विवादास्पद है।

स्त्री शिक्षा, बाल विवाह, विधवा विवाह, वेश्या–उद्धार आदि अनेक समस्याओं को दयानन्द ने अपने युग के सन्दर्भ में उठाया था और उसका उचित समाधान प्रस्तुत किया था। आज ये प्रश्न हमारे लिए महत्वपूर्ण हो गये हैं, परन्तु जिस दृढ़ता व साहस के साथ उन्होंने इन समस्याओं का समाधान समाज के सामने रखा था, उससे उनकी व्यक्तित्व की क्रान्तिकारिता लक्षित होती है और उनका दृष्टारूप भी सामने आता है।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती 20वीं सदी के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा शैक्षिक विचारों को नई दिशा–निर्देश प्रदान करने वाले अग्रणी विचारक, समाज सुधारक, सन्त, महापुरुष तथा स्वयं में एक आन्दोलन एवम् संस्था थे। वैदिक संस्कृति के पुनर्स्थापन तथा पाश्चात्य शिक्षा व्यवस्था से भारतीय शिक्षा को मुक्त करने का महान कार्य स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किया। भारत का युवक पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के प्रभाव में आत्मविश्वास को खोकर अपनी आदतों, स्वभाव तथा रुचियों में अंग्रेज बनता जा रहा था तथा भारतीय परिवेश में अलग–थलग हो रहा था। अतीत में वैदिक सभ्यता और संस्कृति को सम्पन्न कराने वाली भारतीय शिक्षा के अवशेष प्रतीकों को भी मिटाने तथा समाप्त करने का दुष्चक्र चल रहा था। ऐसे नाजुक समय में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ऐसी शिक्षा पद्धति की उद्घोषणा की

जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान की अच्छी और श्रेष्ठ आकृतियों में युक्त हो तथा उस शिक्षा रुपीदर्पण में राष्ट्र अपनी आकृति को निहार सके। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत के नागरिकों के बौद्धिक पतन का निस्तारण प्राचीन शिक्षा पद्धति के द्वारा किया तथा आधुनिक वातारण में शिक्षा को एक नया पथ प्रदर्शित किया।

मीरा (मई 2014) ने विषय ''आर्य समाज एण्ड कास्ट सिस्टम – ए स्टॅडी ऑफ यूनाईटेड प्रॉविन्स पर'' (Journal of Humanities and Social Science) में अपने विचार प्रस्तुत किये इसमें उन्होंने लिखा है कि – यह पेपर स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचार वर्णों पर तथा जाति प्रथा पर निर्धारित करता है।

कुलदीप सिंह (2015) ने विषय ''दयाानन्द सरस्वती एज्युकेशनल फिलॉसफी, सोशल एण्ड पॉलिटिकल आइडियाज'' पर (International Educational E-Journal) में अपने विचार प्रस्तुत किये। इसमें उन्होंने लिखा कि – स्वामी दयानन्द एक महान शिक्षाविद्, समाज सुधारक और सांस्कृतिक राष्ट्रविद् थे। वह एक प्रकाश का देवता एक यौद्धा, भगवान के संसार में पुरुषों और संस्थान के एक मूर्तिकार। दयानन्द सरस्वती का सबसे बड़ा योगदान आर्य समाज की नींव रखना। जिसने शिक्षा, धर्म के क्षेत्र में क्रान्ति लाई।

डॉ. गौरव सचार, डॉ. सुरीना शर्मा (2016) ने विषय ''स्वामी दयानन्द सरस्वती : अर्ली लाइफ, आर्य समाज और रिफार्म्स'' पर (जर्नल ऑफ एडवांस स्टॅडी इन एज्यूकेशन एण्ड मैनेजमेंट, वोल्यूम 1) में अपने विचार प्रस्तुत किए – डॉ. राधाकृष्णा के अनुसार स्वामी दयानन्द जी ने आधुनिक भारत के निर्माण में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने लोगों के अन्दर आध्यात्मिक उत्थान एवं देशभक्ति की भावना जगाई। दयानन्द जी का सबसे बड़ा योगदान आर्य समाज की स्थापना करना।

मिश्रा, मृत्युंजय, मिश्र, डॉ. नन्दलाल (2017) ''वैश्वीकरण के दौर में नैतिक शिक्षा के द्वारा मूल्यों का विकास''। प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने बताया कि वर्तमान समय में नैतिक शिक्षा की बहुत आवश्यकता है। क्योंकि आप की इस चकाचौंध, भागदौड़ भरी जिन्दगी में व्यक्ति ने मूल्यों की पूर्णरूप से अवहेलना कर दी है।

शोध के उद्देश्य

1. स्वामी दयानन्द की शैक्षिक विचारधारा का अध्ययन करना।
2. स्वामी दयानन्द के अनुसार वर्तमान शिक्षा में समाहित किये जा सकने वाले सन्दर्भों का अध्ययन करना।
3. कोविड–19 वैश्विक महामारी में स्वामी दयानन्द के अनुसार शिक्षा दर्शन का अध्ययन करना।

4. स्वामी दयानन्द के शिक्षा सिद्धान्तों का अध्ययन करना।
5. स्वामी दयानन्द के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों का अध्ययन करना।
6. स्वामी दयानन्द के अनुसार वर्तमान शिक्षा प्रणाली में योगदान का अध्ययन करना।

शोध विधि - दार्शनिक शोध विधि

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जीवन परिचय

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती यद्यपि एक महान दार्शनिक थे, फिर भी उनकी गणना दार्शनिकों में नहीं की जाती है। इसका प्रमुख कारण संभवतः यह है कि सामाजिक और धार्मिक सुधार के क्षेत्र में उनकी देन इतनी अधिक और महत्वपूर्ण है कि उसके दार्शनिक रुप की तुलना में उनका सुधारक का अधिक प्रमुख ज्ञान पड़ता है। शंकराचार्य की भांति स्वामी दयानन्द ने वेदों के प्राचीन गौरव को पुनः प्रतिष्ठित किया। स्वामी जी 'जीवात्मा' और 'व्रहत' के गुणों को पृथक मानते थे। ब्रह्म सर्वशक्तिमान है। वह अपनी शक्ति से विश्व का सृजन, पोषण, विसर्जन तथा सृष्टि का नियमन करता है। इसके विपरीत, जीवात्मा, संतान उत्पन्न करता है, उनका पालन–पोषण तथा अन्य अच्छे–बुरे कर्म करता है। ब्रह्म जीवात्मा को उसके कर्मों का फल प्रदान करता है और जीवात्मा उन्हें भोगता है। इस प्रकार, जीवात्मा अपने कर्म करने में स्वतन्त्र है, परन्तु कर्मों का फल भोगने में 'परतंत्र' है। स्वामी दयानन्द ब्रह्म या ईश्वर को सगुण और निर्गुण दोनों ही रुपों में स्वीकार करते है। वे इन दोनों रुपों में भेद नहीं करते हैं। इसलिए उन्हें अद्वैतवादी कहा जाता है।

स्वामी जी संसार को मिथ्या या अवास्तविक नहीं मानते है। उनका मानना है कि इन्द्रियों द्वारा जो वस्तु ग्रहणीय है। वह कदापि मिथ्या नहीं हो सकती है। जगत का परम सूक्ष्म तत्व भी मिथ्या नहीं है। ब्रह्म या परमात्मा जगत की उत्पत्ति का कारण है। जब जगत की उत्पत्ति का कारण परमात्मा सत्य है। तब संसार असत्य नहीं हो सकता है। स्वामी दयानन्द के शब्दों में – ''जिस प्रकार जगत का कारण परमात्मा, सत्य एवं अनादि है, उसी प्रकार जगत की स्थिति भी सत्य एवं अनादि है।''

शोध के उद्देश्य

स्वामी दयानन्द के अनुसार शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. आत्मानुभूति (Self-realization) – स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्राचीन ऋषियों की भाँति बताया कि शिक्षा का प्रथम उद्देश्य आत्मानुभूति है। आत्मानुभूति का अर्थ है अपनी आत्मा को पहचानना। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए स्वामी जी ने बालक तथा बालिकाओं की अनिवार्य शिक्षा के द्वारा व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जिससे प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आत्मा के विषय में सच्चा ज्ञान प्राप्त हो जाये।

2. वैदिक धर्म तथा संस्कृति का पुनरुत्थान (Revival of Vedic Religion and Culture) – स्वामी जी के युग में लोग पौराणिक हिन्दू धर्म में अविश्वास उत्पन्न हो जाने के कारण ईसाई धर्म को स्वीकार करते जा रहे थे। स्वामी दयानन्द ने लोगों को इस धर्म संकट से बचाने के लिए अपनी शिक्षा का दूसरा उद्देश्य वैदिक धर्म तथा संस्कृति का पुनरुत्थान घोषित किया। उनका विश्वास था कि इस उद्देश्य के अनुसार शिक्षा देने से लोगों को अपने प्राचीन वैदिक धर्म तथा संस्कृति का ज्ञान हो जायेगा जिससे वे फिर ईसाई बनना पसन्द नहीं करेंगे।

3. शारीरिक विकास (Physical Development) – स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का तीसरा उद्देश्य शारीरिक विकास है। इसलिए उन्होंने इस बात पर बल दिया कि प्रत्येक बालक तथा बालिका को अपने अध्ययन काल में ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। उनका विश्वास ''यदि ब्रह्मचर्य का अच्छी तरह पालन किया जाये तो इससे शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा का बल बढ़ता है।''

4. मानसिक विकास (Mental Development) – स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का चौथा उद्देश्य बालक का मानसिक विकास है। उन्होंने बताया कि बालक को मानसिक दृष्टि से विकसित करने के लिए माता को 5 वर्ष तक तथा पिता को 8 वर्ष की आयु तक घर पर ही शिक्षा देनी चाहिए। इसके पश्चात् बालक को पाठशाला भेज देना चाहिए।

5. नैतिक विकास (Moral Development) – स्वामी दयानन्द का विश्वास था कि व्यक्ति सत्य का अनुसरण उसी समय कर सकेगा जब उसका नैतिक विकास हो जाये अतः उनके अनुसार शिक्षा का पाचवाँ उद्देश्य बालक का नैतिक विकास है। वे स्वयं लिखते हैं हमारा केवल उद्देश्य यह है कि मानव जाति उन्नति करे तथा फले–फूले। मनुष्य इस बात का ज्ञान प्राप्त करे कि सत्य क्या है? और असत्य क्या है? वे असत्य का त्याग करे तथा सत्य को स्वीकार करे।

6. आदर्श चरित्र का निर्माण (Formation of Ideal Character) – स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का छठवाँ मुख्य उद्देश्य बालक के आदर्श चरित्र का निर्माण करना है। उन्होंने बताया कि इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि माता–पिता तथा गुरुजन सभी चरित्रवान हो तथा वे सभी अपने उच्च विचारों, आदर्शों तथा उपदेशों के द्वारा बालक के चारित्रिक विकास की ओर ध्यान दे।

कोविड-19 (वैश्विक महामारी) स्वामी दयानन्द का शिक्षा दर्शन

यहाँ की शिक्षा व्यवस्था जनतन्त्र, लोकतंत्र के अनुसार ही नागरिक के उचित विकास हेतु निर्धारित की गयी है।

वर्तमान की बात की जाये तो वर्ष 2020 से विश्व के सभी राष्ट्र एक भयंकर महामारी से जूझ रहे हैं। भारत भी इस महामारी से जूझ रहा है। वर्ष 2020 के जनवरी माह में पहला केस रिपोर्ट किया गया, तथा समय बीतने के साथ–साथ केसों की संख्या में भी वृद्धि होती गई। वृद्धि को रोकने का एक उपाय लॉकडाउन (Lockdown)था जिससे सामाजिक दूरी (Social Distancing) को बनाया जा सके। क्योंकि इस महामारी से निजात पाने का एकमात्र यही सही उपाय था जिसके चलते सभी विद्यालयों व महाविद्यालयों में अवकाश घोषित कर दिया गया। विद्यालयों व महाविद्यालयों में अवकाश घोषित होने से एक प्रश्न उभरकर आया कि बालाकें को किस प्रकार शिक्षा प्रदान की जाये ताकि उनकी पढ़ाई का भी नुकसान ना हो।

स्वामी दयानन्द ने भी कहा था कि आवश्यकता के अनुसार शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन किया जना चाहिए। जहाँ पहले शिक्षा कक्षा–कक्ष, गुरूकुल, गुरू आश्रम, विद्यालयों, महाविद्यालयों तक ही सीमित थी। लेकिन समय की मांग के अनुसार ऐसा संभव नहीं था क्योंकि संक्रमण का खतरा बढ़ रहा था। इस कारण विद्यार्थियों के स्वास्थ्य हितों को ध्यान में रखकर कक्षा–कक्ष शिक्षण को बन्द कर दिया गया। एक समय पश्चात यह अनुभव किया जाने लगा कि विद्यार्थियों की शिक्षा का नुकसान हो रहा है तो हमारी शिक्षा संस्थानों द्वारा यह निर्धारित किया गया कि शिक्षण की नवीन तकनीकों का उपयोग करके बालकों को घर बैठे शिक्षा प्रदान की जाये। इसके लिए ऑनलाईन शिक्षण (Teaching) व अधिगम (Learning) की व्यवस्था विभिन्न विद्यालयों व महाविद्यालयों द्वारा की गई।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार विद्यालयों को समाज का लघुरुप कहा है तथा विद्यालयों ने इस भूमिका को बखूबी निभाया। कई विद्यालयों को क्वारंटाइन सेन्टर में परिवर्तन किया गया। स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार शिक्षक की बात की जाये तो शिक्षक एक मित्र, मार्गदर्शक एवं सुविधाकर्ता के रूप में है। शिक्षकों ने विभिन्न ऐप जैसे जूम (Zoom), यू–ट्यूब चैनल, वाट्सएप ग्रुप के माध्यम से विद्यार्थियों का शिक्षण कार्य प्रारम्भ किया इससे उन्हें खुद भी सीखने को मिला जो कि उनके भविष्य में काम आयेगा जो कि स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपयोगिकता का सिद्धान्त है। इसमें बालक को भी एक नवीन शिक्षा आयाम का अनुभव हुआ तथा विद्यार्थियों ने इसमें रूचि भी दिखाई।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने शिक्षाशास्त्री के रूप में शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित करते समय शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास समान रूप से निर्धारित किये हैं। इसलिए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नैतिक शिक्षा (धार्मिक शिक्षा), प्राणायाम, व्यायाम आदि योग क्रियाओं का विशेष निर्देश दिया है।

कोविड–19 वैश्विक महामारी में विद्यार्थियों को प्राणायाम, व्यायाम, आदि योग क्रियाएँ सुबह रोज करने को कहा गया जिससे इम्यूनिटी पॉवर बढ़ती है और सभी विद्यार्थी को कोविड–19

वैश्विक महामारी से बचाया जा सके। विद्यार्थियों को शिक्षकों द्वारा ऑनलाईन कक्षा द्वारा योग सिखाई गई।

अतः निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ–साथ शिक्षा का स्वरूप भी परिवर्तित होता है। चाहे फिर वह कोई महमारी ही क्यों न हो इस रूप में स्वामी दयानन्द सरस्वती का शिक्षा दर्शन कहीं न कहीं उचित परिलक्षित होता है।

संदर्भ सूची

- ओड, डॉ. लक्ष्मी एल.के. (2004): शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- आचार्य, सुदर्शन देव (1992): दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह, दिल्लीः आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट।
- भारतीय, डॉ. भवानी लाल (1983): नव जागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती, अजमेरः वैदिक पुस्तकालय, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम।
- चौबे, एस.पी (2001): शिक्षा के दार्शनिक ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय आधार, मेरठः लायल बुक डिपो।
- चौहान, लाल बहादुर सिंह (2002): स्वामी दयानन्द सरस्वती की जीवनी और दर्शन, आगराः सावित्री प्रकाशन।
- दुबे, रमाकांत (1993): विश्व के कुछ महान शिक्षक शास्त्री, मेरठः मीनाली प्रकाशन।
- हरिश्चन्द्र विद्यालंकार (2001): महर्षि दयानन्द सरस्वती, आगराः साहित्य प्रकाशन।
- पालय, डायसन (1993): वेदान्त दर्शन, लखनऊः उत्तर प्रदेश हिन्दी अकादमी।
- पाण्डेय, राम शकल (2004): उदीयमान भारतीय समाज के शिक्षक, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- सरस्वती, दयानन्द (2002): सत्यार्थ प्रकाश, दिल्लीः सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा।